सामाजिक चिन्तन के स्वरूप

डा. बिजेन्द्र प्रधान
प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी

© लेखकगण

इस पुस्तक के किसी भी अंश की किसी भी रूप में प्रतिकृति करना या किसी भी साधन-इलेक्ट्रॉनिक, मेकैनिकल या अन्य प्रकार, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या सूचना संचयन और पुनः प्राप्ति पद्धति - द्वारा प्रसारित करना लेखकगण/प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना मना है।

हिमांशु पब्लिकेशन्स

464, हिरण मगरी, सेक्टर 11
उदयपुर 313 002 (राज.)
फोन: 0294-5106166, 5106163

HIMANSHU Publications

4379/4-B, प्रकाश हाऊस
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
फोन: 011-32551698, 23255920

Web : himanshupublications.com
email : himanshupublications@gmail.com

ISBN : 978-81-7906-653-9
संस्करण : 2017
मूल्य : 495.00/-

-वितरक-

आर्य बुक सेन्टर
हॉस्पिटल रोड, उदयपुर (राजस्थान) ☎: 0294 2526160
e-mail : aryabook@gmail.com

भूमिका

व्यक्ति और समाज में कौन अधिक महत्त्व
विद्वानों एवं मनीषियों द्वारा समय-समय पर
व्यक्ति को महत्त्व देता देखा गया है तो क
महत्त्व देता है। यह मूल्यांकन प्रायः उपयोगि
जिस किसी की दृष्टि के केन्द्र में भगवान
शंकराचार्य, विवेकानन्द, महात्मा गांधी जैसे म
व्यक्ति ही सबकुछ है क्योंकि इन महापुरुषों
आधार पर समाज में बदलाव लाने में सफल
व्यक्ति पहाड़ तोड़ नहीं सकता किन्तु इन लोग
बड़े कार्य अकेले दम पर करके दिखाया है।
किन्तु समाजशास्त्रियों के अनुसार केन्द्र में
चाहिए। एक व्यक्ति में बदलाव आना महत्त्वपू
समाज में आना चाहिए।

प्लेटो, अरस्तू जैसे महान चिंतक समाज क
की अवधारणा निश्चित करते हैं। अरस्तू क
महत्त्वपूर्ण है कि समाज से परे व्यक्ति या तो
राक्षस। मनुष्य तो एक सामाजिक प्राणी ही है।
नहीं कर सकता। समाज में वह पैदा होता है।